Vijay Kumar Jha.
Asso Prof.
Deptt in History.
V.S.J. college Rajnagar.

Degree part III
Paper - VI th

Factors responsible for national awakening

अँग्रेजी शासन काल के अन्तर्गत विभिन्न कारणों ने भारतीय जनता में राष्ट्रीय जागृति तथा भावना का संचार किया। जिसके परिणामतः राष्ट्रीय आन्दोलन का शुभारंभ हुआ और अंततः 1947 ई० में भारत अपने आपको अंग्रेजी राज से मुक्त हुआ। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन कई शक्तियों और कारणों के सम्मिलन से उत्पन्न हुआ जो इस प्रकार थे —

(1) 1857 का स्वतंत्रता संग्राम :— अँग्रेजों के दमनकारी एवं अन्यायपूर्ण नीति के विरोध में भारतीयों ने 1857 ई० का विद्रोह किया था जो भारत का प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन था। अंग्रेजों ने इस आंदोलन का बर्बरतापूर्ण तरीके से दमन किया। फलतः भारतीय आक्रोशित हो उठे। नाना साहेब, झांसी की रानी, कुंवर सिंह जैसे महान क्रांतिकारियों के नेतृत्व में भारतीयों ने इसका जवाब देना चाहा।

(2) अंग्रेजी भाषा :— 1835 ई० में अँग्रेजी भाषा को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया जिसके कारण विभिन्न प्रदेशों के लोग एक दूसरे के निकट में आकर अपना विचार आदान-प्रदान किया। इसके अतिरिक्त भारतीयों को पाश्चात्य साहित्य और विचारों के अध्ययन कि सुविधा मिली।

(3) राजनीतिक एकता :— अँग्रेजी शासन काल में भारत एक राजनीतिक शक्ति के अधीन आ गया हालांकि इससे पहले भी भारतीयों को ऐसी मौका मिली थी किन्तु वे इतना प्रभावशाली नहीं था। एक राजनीतिक एकता ने भारतीयों को विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष करने कि एकजुटी प्रेरणा मिली।

(4) पाश्चात्य साहित्य और शिक्षा :— भारतीयों ने पाश्चात्य साहित्य का अध्ययन किया जिससे भारतीयों ने स्वतंत्रता, समानता, प्रजातंत्र और राष्ट्रीयता के ज्ञान प्राप्त किया। पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन के बाद बहुत से भारतीय विदेश जाने लगे। ये स्वतंत्र

JUNE 2019
Su Mo Tu We Th Fr Sa
2 3 4 5 6 7 8
9 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29
30

Scanned with Cam

वातावरण है वे काफी प्रभावित हुए और भारत के किसी भी उसने अपने मन में वैसे ही कल्पना किया।

(5) 19वीं सदी के धार्मिक और सामाजिक आन्दोलन :- 19वीं सदी के धार्मिक और सामाजिक आन्दोलन जिसका प्रणेता राजा राम मोहन राय, का ब्रह्म समाज, स्वामी दयानन्द सरस्वती का आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, श्रीमती एनीबेसेंट और थियोसोफिकल समाज आदि ने भारतीयों को भारतीय संस्कृति और धर्म की श्रेष्ठता का ज्ञान कराया वे सब देश प्रेमी थे और भारतीय राष्ट्रीयता उत्पन्न किया।

(6) विदेशी विद्वानों द्वारा भारतीय साहित्य की प्रशंसा :- यूरोप के कई विद्वानों ने भारतीय साहित्य का अध्ययन किया और भारतीय सभ्यता और संस्कृति की प्रशंसा किया जिसमें विलियम जोन्स, मैक्समूलर, चार्ल्स विल्किंस प्रमुख हैं। इससे भारतीयों को अपनी धर्म, संस्कृति तथा देश के गौरव का पता चला।

(7) अंग्रेजों द्वारा भारत का आर्थिक शोषण :- अंग्रेजों ने प्रारंभ से अन्त तक भारतीयों का शोषण करते रहे। औद्योगिक क्रांति एवं 1813 ई० के अंग्रेज कम्पनियों को भारत में व्यापार करने की सुविधा ने इस आर्थिक शोषण को बढ़ा दिया। भारतीय उद्योग धंधे चौपट हो गये और कृषि पर भार बढ़ गया। भारतीय धन इंग्लैण्ड के खजाना में जमा होने लगा फलतः भारत में निर्धनता तथा बेरोजगारी में वृद्धि स्वाभाविक हो गया।

(8) यातायात और आवागमन के साधनों में वृद्धि :- अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत रेल, डाकतार, सड़क, मोटर आदि ने आवागमन की सुविधा प्रदान किया जिससे भारतीयों को संगठित होकर विचार प्रकट करने में सुविधा मिली इनको जाने आने की सुविधा मिली जिससे राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ।

(9) विदेशों से सम्पर्क :- विदेशों से सम्पर्क स्थापित होने के कारण विदेशी विचारों और आन्दोलनों का प्रभाव भारत पर पड़ा प्रथम महायुद्ध के समय पर और उसके बाद में सम्पर्क और बढ़ा।

(10) समाचार पत्रों और देशी साहित्य का योगदान :- भारत में विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में अनेक समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे। 1877 ई० में इनकी संख्या [illegible] थी

ये सभी समाचार पत्र अंग्रेजी शासन के विरुद्ध थे तथा ये भारतीयों के प्रति अंग्रेजी व्यवहार, आर्थिक शोषण, जातीय दमन रंग-विभेद की नीति और शासन के दोषों को छापते रहे जिससे सभी जनसाधारण में अंग्रेजी शासन के प्रति घृणा उत्पन्न हो रही थी। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, बंकिम चन्द्र चटर्जी, रवीन्द्र नाथ टैगोर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसे साहित्यकारों कि रचनाओं ने भारतीयों को राष्ट्रीयता कि अलख जगाया। बंकिमचन्द्र चटर्जी ने आनन्दमठ तथा वन्देमातरम की रचना राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन दिया।

(11) लार्ड लिटन का शासनकाल :— लार्ड लिटन कि अकर्मण्यता दुर्भिक्ष और महामारी के बीच दिल्ली दरबार का आयोजन, विक्टोरिया कि महारानी घोषित करना, भारतीय जन आंदोलन समाप्त करना के लिये वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट तथा शस्त्र कानून का निर्माण कर लिटन ने प्रज्वलित आग में घी डालने का काम किया।

(12) इलबर्ट बिल का विरोध :— लार्ड रिपन ने एक प्रस्ताव के द्वारा भारतीय मजिस्ट्रेटों को यूरोपियन अपराधियों के मुकदमे के निर्णय देने का अधिकार देना चाहा। जिससे सम्पूर्ण भारत और इंग्लैण्ड में अंग्रेजों ने तीव्र आन्दोलन किया यह प्रस्ताव संशोधन के बाद ही कानून बन सका। इस प्रस्ताव में काले और गोरे के भेदभाव का स्पष्ट है कि अंग्रेज कितने भारतीयों कि अवहेलना करता था।

(13) लार्ड कर्जन का शासन :— लार्ड कर्जन भारतीयों पर अविश्वास करता था अतः उनके द्वारा भारतीयों को सम्मानित पदों से हटाना उनके विरुद्ध कटु शब्दों का प्रयोग करना भारतीयों के असंतोष के कारण बना। इसके अतिरिक्त कलकत्ता विश्वविद्यालय अधिनियम कलकत्ता कॉरपोरेशन अधिनियम और बंगाल विभाजन भारतीयों में असंतोष का कारण बना। बंगाल विभाजन के विरोध स्वरूप भारत में सर्वप्रथम स्वदेशी आन्दोलन और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार प्रारम्भ हुआ।

(14) शिक्षित भारतीयों में असंतोष :— भारतीयों के लिये भारतीय उच्च सेवाओं में प्रवेश वर्जित था। अंग्रेज सरकार का भारतीयों को आई० सी० एस० सेवा से अलग रखने का प्रयास था। इन कठिन परिस्थितियों में 1869 ई० में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने

आई॰ सी॰ एस कि परीक्षा पास कर ली किन्तु उन्हें सेवा में नहीं लिया गया। इस सेवा कि आयु 21 वर्ष के स्थान पर 19 वर्ष कर दिया गया जिससे भारतीयों के लिये इसमें प्रवेश कठिन हो गया।

(15) ~~जातीय~~ जातीय कटुता :- अंग्रेज अपने को सर्वश्रेष्ठ मानकर भारतीयों से घृणा करते थे और भारतीयों को हीन समझते थे उन्हें अनेक घृणित वाक्य से सम्बोधन करते थे। इससे भारतीयों में तीव्र आक्रोश बढ़ रहा था

(16) विदेशी घटनाओं का प्रभाव :- इंग्लैण्ड कि गौरवपूर्ण क्रांति अमेरिका स्वातंत्र्य आन्दोलन, इटली तथा जर्मनी का एकीकरण, फ्रांस कि तृतीय गणराज्य कि स्थापना आदि अनेक घटनाओं से भारतीयों को प्रभावित होना

(17) 1885 में अखिल भारतीय काँग्रेस कि स्थापना :- भारतीयों में राष्ट्रीय भावना का विकास उपर्युक्त कारणों से हो चुका था अब उन्हें एक ऐसी संस्था कि आवश्यकता थी जिसके अधीन रहकर वे आन्दोलन चलाता। अतः 1885 ई० में ए० ओ० ह्यूम के द्वारा भारतीयों के हित के लिये अखिल भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस कि स्थापना किया गया जो स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है यह संस्था एक महत्वपूर्ण संगठन बन गया और राष्ट्रीय आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान करने में सफल रही। इसी राष्ट्रीय संगठन के अधीन समस्त भारतीय एक राजनीतिक सूत्र में बंधकर स्वराज के लिये प्रयत्न किया। काँग्रेस के आन्दोलन ने राष्ट्रीय भावना को तीव्र से तीव्रतर किया और बाद में स्वतंत्रता प्राप्त करने में प्रमुख हिस्सा लिया। भारतीयों के हृदय में राष्ट्रीय भावना का संचार करने में ए० ओ० ह्यूम ने अहम भूमिका निभाया। 28 दिसम्बर 1885 को 12 बजे दिन में बम्बई के गोकुलदास तेजपाल कालेज में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस का जन्म हुआ। इस अधिवेशन का सभापतित्व उमेश चन्द्र बनर्जी ने किया जिसमें 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

Scanned with Cam